Nikhil
N.S.J. College
Rajnagar

— संथाल (Santhal) —

(A) निवास क्षेत्र एवं जनसंख्या — पू० भारत की यह सर्वाधिक आबादीवाली जनजाति मुख्यतः असम, प० बंगाल, झारखंड, बिहार, उड़ीसा में निवास करती है। झारखंड के प्राचीन संथाल परगना जिले में ये सर्वाधिक हैं। राजमहल के (दामिन-ए-कोह) क्षेत्र में 75% संथाल केन्द्रित हैं। झारखंड में लगभग 28 लाख संथाल हैं। ये संथाल परगना में केन्द्रित थे।

(B) शारीरिक बनावट → शारीरिक बनावट प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड जैसी है। रंग भूरा से काला (Melanoderms), सिर लम्बा, सिर-सूचकांक 73-78, कम कपाल-धारिता, मझोली और कुछ उठी नाक, नासिका सूचकांक 77, सीधे या लहरदार बाल, चौड़ा मुँह, पतले-उभरे ओंठ, उभरा ललाट, काली आँखें, नेत्र सूचकांक 80-87, रक्त में O वर्ग की अधिकता, औसत कद 160 cm होता है।

(C) वस्त्र एवं आभूषण → मर्द कुपनी कच्चा (लंगोट), धोती, दहरी, पाटका (कार्ड), पिछौरी और बरकी (चादर, लिहाफ) पहनते हैं। युवक ~~बाहों~~ बाँहों में टैजेर, बांहों में खागा, कानों में कुंडल पहनते हैं।

औरतें कमर में पारहार, ऊपरी भाग में पंची, शांखा, हाथों में चांदी, पीतल या काँसे के साकोम, गले में सिकड़ी-हँसुली, कानों में पानरा पहनती हैं। फूल-पत्तों से श्रृंगार करती हैं।

(D) भोजन → दाका-उरू (भात-दाल), मक्के की दलिया, महुआ, मडुआ, कुल्थी, कचनार, मुनगा, सब्जी और

मछली, सूअर, मुर्गी खाते हैं। महुआ तथा चावल की शराब (हड़िया) पीते हैं। सुबह में बासी भात का बासकपाड़ (जलपान), दोपहर में माजजान (भोजन), रात में कदोड़ (रात्री भोजन) करते हैं।

(E) गाँव → गाँव (आतो) जल-स्रोत के पास होते हैं जहां 40-50 परिवार रहते हैं। मकान सड़कों (कुल्ही), गलियों के किनारे होते हैं। मांझी के मकान के सामने चबूतरे (मांझी-स्थान) पर मांझी के पितर स्थापित रहते हैं। वहां पंचायत होती है। गांव से कुछ हटकर जोहर-स्थान में पेड़ के नीचे देवता स्थापित रहते हैं।

(F) घर → घर के आगे ओसार होता है। घर दोचाला या चारचाला (चातोम ओड़ाक) होता है। दरवाजा एक होता है। मकान लिपे-पुते होते हैं। खिड़की नहीं होती, दो कमरे होते हैं। एक में भोजन तथा सोने का, तो दूसरे में अनाज और गृह-देवता (ओड़ाक-बोंगा) रखे जाते हैं। आंगन भी होते हैं। मकान के साथ पशु-गोशाल, भेड़-बकरियों के लिए बरामदे में कुड़ी और सुअर के लिए सकटी होती है।

(G) ग्राम-व्यवस्था → ये स्थाई गाँवों में रहते हैं। मध्य में अखाड़ा या नृत्य-भूमि होती है। एक भाग में शशान (श्मशान) होता है। जहां मृतक का प्रतीक पत्थर रखा होता है। इस शशानदिरी के नीचे अस्थियां गाड़ी जाती हैं।

युवक-युवतियों के शक्ति-कितान,

आमोद-प्रमोद, मनोरंजन के लिए पृथक घर (गितिओड़ा) बना होता है।

(H) सामाजिक संगठन → सहयोग की भावना होती है। सामूहिक खेती, शिकार, नाच-गान होता है। इनके 12 गोत्रों (पारिस) में किस्कू, सोरेन, हेम्ब्रम, मुर्मू, टुडू, [illegible] (टोटम), बास्के, हांसदाक प्रमुख है। गोत्र का नाम पशु-पक्षियों के नाम पर होता है। 200 उपगोत्र (खूंट) है। परिवार पितृ-प्रधान है। घूंघट-प्रथा नहीं है। प्रेत, ओझा, डाइन में विश्वास है। समगोत्री या गलत यौन-सम्बन्ध के लिए जाति-विलग (बिटलाहा) किया जाता है। जोम-(जाति-भोज) देने पर पुनः सम्मिलित कर लिया जाता है। प्राय: संयुक्त परिवार प्रथा है। औरतें पंचायत, पूजा-पाठ में भाग नहीं ले सकती। जानम हथियार होता है।

(I) सामाजिक नियंत्रण → ग्राम-पंचायत में मांझी (प्रधान), परानिक (प्रधान के बाद), जोग मांझी उसका सहायक जोग परानिक, गोडेत मांझी होते हैं। ग्राम-पंचायत के ऊपर 5 मांझियों की पंचायत का सभापति मोड़े मांझी कहलाता है। उसके संदेश वाहक को चाकलादार कहते हैं। देश मांझी परगना का सहायक होता है।

(J) शिकार → शिकार परिषद (सेन्द्रा-बैसी) के प्रधान (डिहरी) और पुजारी के निर्देशन में सामूहिक शिकार होता है। तीर से पशुओं तथा जाला, हाथा, किंत

PAGE NO :
DATE :

कुमनी, बंसी से मछली मारते है।

(K) धार्मिक सम्प्रदाय →
(i) बोंगाहोड़ - ये सनातन संथाल है। बोंगाबुरु, मरांग, आदि देवताओं पर फल, फूल, बलि चढ़ाते है।
(ii) साफाहोड़ → ये सुधारवादी है। एक ईश्वर को मानते है। बलिदान, भूत, प्रेत, पूजा, मदिरा-पान नहीं करते।
(iii) ईसाहोड़ → ये ईसाई है। प्रचलित पर्व और त्योहार को नहीं मानते। ये अधिक शिक्षित है।

(L) पर्व-त्योहार → नाच गान के साथ सामूहिक त्योहार होता है। सोहराय, सकरात, मागासिम, बाहा, हरियाड़ आदि पर्व मनाते है।

(M) कृषि → हल, कुदाल, खुरपा, हंसिया आदि से सघन निर्वाहक कृषि करते है। चावल, गेहूं, दलहन, तिलहन, मक्का, सब्जी आदि उपजाते है।

(N) विवाह → 18-20 वर्ष मे विवाह होता है। देवर-भाभी, साली-बहनोई मे पुनर्विवाह तथा विधवा-विवाह भी होता है। समगोत्री विवाह नही होता। वर पक्ष से पोन (वधु मूल्य) दिया जाता है। तलाक होने पर पोन लौटाना पड़ता है।
- विवाह के प्रकार -
(i) सादाई बापला - माता-पिता द्वारा तय विवाह
(ii) घरजवाय बापला - इसमे वर पोन के बदले ससुराल मे रहकर काम कर देता है।

PAGE NO :
DATE :

(iii) घर दी जवाय बापला → पाने के बदले ससुराल में 5 वर्षों तक काम करता है।
(iv) गोलाइटी बापला → वर-वधू के परिवारों में परस्पर विवाह
(v) टुंकी दिलिप बापला → कन्या को वर के घर लाकर विवाह
(vi) कनीर बेलोक बापला → लड़की की अंगुली लड़का छूता है, तो लड़की की रजामंदी से विवाह होता है।
(vii) किरिन बेलोक बापला → लड़का - लड़की जंगल में भागकर ~~विवाह~~ विवाह करते हैं।
(viii) मिरिंग बापला → इसमें लड़का खरीदा जाता है। समगोत्री या विवाह-पूर्व गर्भ होने पर लड़की के पिता से चावल लेकर शादी करवाई जाती है।
(ix) सेंगा बापला → विधवा या विधुर विवाह। सिंदूर प्रथा है। विवाह जोग मांझी करवाता है।

(O) आर्थिक क्रिया-कलाप → कृषि प्रमुख पेशा है। कंदमूल, फूल, फल आदि वन-वस्तु संग्रह, कटाई-बुनाई और शिकार भी करते हैं। अब ये उद्योगों, ईंट-भट्टों, सरकारी नौकरियों, खान-खदानों में भी काम करते हैं। साप्ताहिक हाटों में वस्तु-विनिमय भी होता है। बारी में तम्बाकू, मक्का, बाजरा, कुल्थी, अरहर और घर से दूर ऊँची भूमि में ज्वार, कपास, तिलहन, सरसों उपजाते हैं। निम्न भाग में धान होता है। परम्परागत कृषि यंत्रों, बैल, भैंसा से खेती करते हैं।

(P) मृतक संस्कार → नदी किनारे शव जलाते हैं। गाड़ने की प्रथा भी है। श्राद्ध करते हैं।

Scanned with CamScanner

PAGE NO :
DATE :

इन पर ~~वाह्य~~ बाह्य संस्कृति की छाप पड़ रही है। पर मौलिक विशेषताएं अप्रभावित है। इन पर भौतिक पर्यावरण की छाप स्पष्ट दिखलाई देती है।